

पलमर का तेरा ध्यान किया मैं कंठ स्वरों से भर आया ।  
स्वर की लहरों में लहरा के - गीत मेरे दिल ने गाया " गीत मेरे -

मैं वीणा वादिनी मैं हंस वाहिनी ॥२॥

① स्वेत वस्त्र मन को अति भाये - गले में मणियों की माला  
कर कमलों में वीणा साजे - हँ अनुपम ये स्वर-वादा, हैं अनुपम --- ॥२॥  
निर्मल जीवन धारा दौ मैं ॥२॥ और मिले करुणा दया - मेरा और --- ॥२॥  
स्वर की लहरों -

मैं वीणा वादिनी मैं हंस वाहिनी ॥२॥

पलमर का तेरा - स्वर की - मैं वीणा वादिनी मैं हंस वाहिनी

② द्विज अलौकिक देवी की मूरत - हृदय-पटल में अंकित है  
श्री चरणों में शीश मुकाये - भाव मेश ना शंकित है - भाव मेश --- ॥२॥  
इतना प्यार मिला है मैं से ॥२॥ नहीं चाहिए धन मत्था  
स्वर की लहरों -

मैं वीणा वादिनी मैं हंस वाहिनी ॥२॥

पलमर का तेरा - स्वर की - मैं वीणा वादिनी मैं हंस वाहिनी

③ गायन वदन सत् स्वरों पर - गुंन उठी है शहनाई  
वीणा की मूनकार तेरी मैं - खुशियों की किरणें लाई - खुशियों की --- ॥२॥  
कैसे करे गुणगान तेरा मैं ॥२॥ सब कुछ तुमसे है पाया  
स्वर की लहरों -

मैं वीणा वादिनी मैं हंस वाहिनी ॥२॥

पलमर का तेरा - स्वर की - मैं वीणा वादिनी मैं हंस वाहिनी

④ " श्री बाबा श्री " इतना अज्ञानी - मैं तुमको ना जान सका  
तेरी शक्ति महान है माता - ना तुमको पहिचान सका --- मेरा ना तुमको --- ॥२॥  
हर जन्मों में मैं को पाया ॥२॥ प्रेम ने नीर को दल काया  
स्वर की लहरों -

मैं वीणा वादिनी मैं हंस वाहिनी ॥२॥

पलमर का तेरा ध्यान किया मैं कंठ स्वरों से भर आया  
स्वर की लहरों में लहरा के - गीत मेरे दिल ने गाया

मैं वीणा वादिनी मैं हंस वाहिनी ॥२॥